9. प्राकृतभाषया संस्कृतभाषया वा अनुवादो विधेयः - 20

प्राचीन भारतीय भाषाओं में संस्कृत का स्थान शीर्षस्थ है, किन्तु संस्कृत का जिससे निर्माण हुआ है वह मूलभाषा प्राकृत है। प्राकृत संस्कृत की जननी है, प्रकृति है, जबकि संस्कृत, प्राकृत का संस्कारित रूप है। प्राकृत स्वाभाविक भाषा है, संस्कृत कृत्रिम भाषा है। स्वयं 'संस्कृत' शब्द ही उसके संस्कारित स्वरूप का प्रमाण है। वस्तुतः प्राकृत भी एक भाषा नहीं अपितु भाषा समूह का नाम है। भारतीय भाषाओं के विकास में इन प्राकृतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैन और बौद्ध धर्म के प्रवर्तकों एवं आचार्यों ने अपने को जन-जन से जोड़ने के लिए इन्हीं प्राकृतों को अपनाया।

A **(Printed Pages 4)**

AS-2162

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

संस्कृत

वर्ग - च

(निबन्धः अपठित अनुवादश्च)

समयः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्कः - 100**

निर्देश : केचन **पञ्च**प्रश्नाः समाधेयाः। प्रथमः प्रश्नोऽनिवार्यः। प्रतिवर्गमेकैकस्य प्रश्नस्योत्तर देयम।

1. संक्षिप्तटिप्पण्यः लेखनीयाः - 4×5=20

(क) धम्मपदं ।

(ख) थेरीगाथा।

(ग) आर्षप्राकृतम् ।

(घ) हरिभद्रसूरिः।

(ङ) सेतुबन्धम् ।

प्रथमो वर्गः

2. पालिभाषया संस्कृतभाषया वा निबन्धो लेख्यः - 20

भगवा बुद्धों

अथवा

पञ्चसीलं

3. संस्कृतभाषया पालिभाषया वा निबन्धो विलिख्यताम् - 20

चत्तारि-अरिय-सच्चानि

अथवा

बौद्धदर्शने विपश्यना

द्वितीयो वर्ग :

4. प्राकृतभाषया संस्कृतभाषया वा निबन्धो लेख्यः 20

प्राकृत-काव्य-परम्परा।

अथवा

महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।

5. पालिभाषायाः अट्ठकथासाहित्यस्य परिचयो देयः। 20

तृतीयो वर्ग :

6. हिन्दीभाषायाम् अनुवादो विधेयः - 20

(क) चरं वा यदि वा तिट्ठं, निसिन्नो उदवा सयं।
समिञ्जेति पसारेति, एसा कायस्स इञ्जना।।

(ख) अट्ठिनहारूसंयुत्तो, तचमंसावलेपनो।
छविया कायो पटिच्छन्नो, यथाभूतं न दिस्सति।।

7. अधोलिखितयोः हिन्दीभाषायाम् अनुवादः करणीयः - 20

(क) आरम्भन्तस्स धुअं लच्छी मरणं वि होइ पुरिसस्स।
तं मरणमणारम्भे वि होइ लच्छी उण ण होइ ।।

(ख) तं मित्तं काअव्वं जं किर वसणम्मि देस आलम्मि।
आलिहिअभित्तिवाउल्लअं वण परम्मुहं ठाइ।।

चतुर्थो वर्गः

8. पालिभाषया संस्कृतेन वाऽनुवादः करणीयः - 20

पालि एवं प्राकृत दोनों जनभाषायें थीं। आज हमें जो साहित्य प्राप्त हो रहा है वह 'विशिष्ट' है। प्राकृत भाषा में सभी भाषाएँ विलीन हो जाती हैं तथा इसी प्राकृत भाषा से सभी भाषाएँ निकलती हैं। वर्तमान में प्राप्त पालि एवं प्राकृत वैदिक संस्कृत के अधिक नजदीक हैं। आज प्राकृत के अनेक रूप मिलते हैं। पालि को पहले 'मागधी' कहा जाता था। जबकि मागधी प्राकृत का एक प्रकार है। बुद्धवचनों के संग्रह की अपनी ऐतिहासिक परम्परा है। प्रथम संगीति में प्रथम बार विनय एवं धर्म का संगायन हुआ। बुद्धवचनों का 'पालि' नामकरण बाद में हुआ। अट्ठकथाओं में यह नाम प्राप्त होता है। अट्ठकथाकार 'पालि' शब्द का प्रयोग पहले बुद्ध वचनों के लिए करते थे।